देने लगे थे। जनता सामंती व्यवस्था से ऊब चुकी थी और उसका विरोध करने लगी थी। जन-क्रान्ति की भावना पनप रही थी। अंग्रेजो ने हमारे निरंतर विकासवान उद्योग-धन्धों का नाश कर हमारी सामाजिक और आर्थिक उन्नति में एक भयंकर व्यवधान उपस्थित कर दिया। इस नई संस्कृति के संस्पर्श से चेतना ही जाग उठी।

नव चेतना का उदय - रामविलास शर्मा के शब्दों में, "संसार के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्ल मार्क्स, डारविन, भारतेन्दु, ईश्वरचन्द विद्यासागर, आदि महापुरुषों के त्याग और तपस्या का यही काल था। इन वैज्ञानिकों, समाज-सुधारकों और साहित्यिकों ने मानव-विकास के मार्ग में अड़ी हुई बड़ी-बड़ी शिलाओं को अपने सबल हाथों से ठेल कर एक ओर कर दिया। भारत में सन् 1857 के पहले रीतिकालीन परम्परा का जोर था। यह वह संस्कृति थी, जो समाज को निकम्मा बनाए हुई थी। इस परम्परा का मुसलमानी दरबारों में ज्यादा जोर होना — स्वाभाविक था। एक दिन वह महल ढहकर गिर पड़ा, लखनऊ और दिल्ली की बुलबुलें उड़ गईं। लाखों किसानों का रक्त बहा। नवाबी का अंत हुआ। लोगों ने एक सुख

की साँस ली। रामपुर और हैदराबाद में " फिर बुलबुलें चहकने लगीं।
नूतन चेतना – प्रसिद्ध आलोचक प्रकाशचन्द्र गुप्त ने आधुनिक युग की प्रेरक विभिन्न परिस्थितियों का विवेचना करते हुए लिखा है– "आधुनिक युग का प्रारम्भ उत्पादन, यातायात और वितरण के नए साधनों के साथ होता है। अंग्रेजों ने भारत की आर्थिक व्यवस्था में अनेक नए परिवर्तन किए। एक ओर तो उन्होंने देशी उद्योग-धन्धों को आमूल तहस-नहस किया, किन्तु दूसरी ओर ~~से~~ उन्होंने विदेशी पूँजी से नए उद्योग-धन्धे ~~भी आरम्भ~~ भी भारत में स्थापित करने शुरू किए। रेल, तार डाक जो उन्होंने अपनी आर्थिक और राजनीतिक सत्ता कायम करने के लिए खड़े किए वे भारत में एक नए जीवन और संस्कृति के दूत भी बन गए। अंग्रेजी शिक्षा का जो अस्त्र उन्होंने अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए चलाया था, सुदर्शन-चक्र की भाँति उलटकर उन्हीं के मर्म-स्थल पर लगा।" इस नवीन शिक्षा से, ~~अंग्रे~~ अंग्रेजों की आशा के विपरीत, जाति में नव-चेतना का प्रभाव विकसित हुआ। इन नव-चेतना के आलोक में अपने देश, समाज, साहित्य, संस्कृति आदि के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न हुई। अंग्रेजी

शिक्षा के माध्यम से हमारा पश्चिम से अधिकाधिक सम्पर्क बढ़ता गया और अंग्रेजों की स्वार्थ-लिप्सा और मक्कारी का रूप अधिक स्पस्ट होता चला गया। अंग्रेजों द्वारा आरम्भ की गई नई शिक्षा-प्रणाली ने भारत की पुरानी शिक्षा-प्रणाली का विनाश कर शिक्षा को ज्ञान का नहीं, केवल जीविकोपार्जन का साधन बना दिया जिससे देश में निरक्षरता बढ़ती चली गई क्योंकि यह नई शिक्षा बहुत खर्चीली थी।

सामाजिक चेतना — ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज के रूप में हमारा धार्मिक दृष्टिकोण सुधारवादी रूप ग्रहण करने लगा। राजाराम मोहन राय और स्वामी दयानन्द ने धार्मिक रूढ़ियों का विरोध कर सामाजिक सुधार की आवाज बुलन्द की। दूसरी ओर अनेक प्रकार के कर, अकाल, महामारी तथा राजनीतिक अत्याचारों से जनता में देश-प्रेम की जागृति उत्पन्न हुई। क्योंकि सामान्य जन इस सबका कारण विदेशी अंग्रेज को ही समझता और मानता था। इससे देश में एक नए प्रकार के संघर्ष का जन्म हुआ।

साहित्य का जनतांत्रिक रूप — इस काल के साहित्य को सर्व-सुलभ और जन-प्रिय बनाने में बहुत योग दिया। प्रेस ने साहित्य को जनतांत्रिक रूप प्रदान कर उसे जन-सामान्य तक पहुँचाना आरम्भ कर दिया। समाचार-पत्र, उपन्यास,

कहानियाँ, कविता आदि प्रेस के कारण खूब प्रचारित हुई। कहा जाता है कि अंग्रेजों के प्रयत्न से हिन्दी-गद्य के सुव्यवस्थित रूप का प्रचार हुआ। उन्होंने भारतीय विद्वानों द्वारा हिन्दी-उर्दू पुस्तके लिखवाने का भी प्रयत्न किया, परन्तु यह मत आंशिक सत्य पर आधारित है। अंग्रेजों ने तो आरंभ से ही हिन्दी और उर्दू के बीच वैमनस्य की दीवार खड़ी कर उर्दू को बढ़ावा देने का और हिन्दी को हतोत्साहित करने का का षड्यंत्र रचना आरंभ कर दिया था। हिन्दी-गद्य तो नये युग की नई जरूरतो को पूरा करने के लिए पहले ही जन्म ले चुका था और उसका प्रचार बढ़ रहा था, जो इन लोगों के लिये गद्य से अधिक पुष्ट, परिष्कृट और प्रांजल था। भारत में अंग्रेजो के आने से पूर्व हर गाँव में पाठशालाएँ और मदरसे थे जिसमें सबको पढ़ाया जाता था। इसलिए भारत में अशिक्षितों की संख्या न के बराबर थी, परन्तु अंग्रेज उस शिक्षा-व्यवस्था को नष्ट कर अपनी नई शिक्षा-प्रणाली प्रारम्भ की थी।

राष्ट्रीय चेतना का उदय – इसके अतिरिक्त ईसाई-प्रचारकों ने भी हिन्दी का प्रचार करने में योग दिया। उन्होंने अपनी धार्मिक

पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद करके ईसाई धर्म के प्रचार जनता में वितरित किया। नई शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की सन् 1985 में 'इंडियन नेशनल कॉंग्रेस' की स्थापना हुई, जिसने आगे चलकर भारतीय तिन्तनधारा को बहुत अधिक प्रभावित किया, इस काल के साहित्य की इसी प्रवृत्ति की ओर संकेट करते हुए डॉ॰लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय लिखते हैं – "उनीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के हिन्दी लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाओं में नव-भारत की राजनीतिक और आर्थिक महत्वाकाक्षाएँ प्रकट करके अपने चारों ओर के धर्म और समाज की पतित अवस्था पर क्षोभ प्रदर्शित करते हुए भविष्य के उन्नत और प्रशस्त जीवन की ओर इंगित किया।"

खड़ीबोली-गद्य का व्यापक प्रचार – बाबू गुलाबराय आधुनिक युग की पृष्ठभूमि का संक्षिप्त परिचय देते हुए लिखते हैं – अंग्रेजी राज्य के आने लोगों का ध्यान जीवन की कठोर वास्तविकताओं की ओर गया। जीवन-संग्राम बढ़ा और साथ ही, जीवन की भी जागृति हुई। राजा राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज की और महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की। अतः अंग्रेजी राज्य के साथ-साथ गद्य का युग आया पद्य में ब्रजभाषा का साम्राज्य था किन्तु नवीन युग आ जाने पर उसकी कोमल-कान्त पदावली जीवन की संघर्षमय कठोर भूमि के लिए अनुकूल

सिद्ध न हो सकी।

आधुनिक-काल की विशेषताएँ - आधुनिक काल को हिन्दी-साहित्य का 'स्वर्ण-युग' कहा जा सकता है। इस काल में साहित्य के प्रत्येक अंग का जन्म और विकास हुआ। साथ ही विभिन्न साहित्यिक रूपों और प्रवृत्तियों की विविधता भी रही है। इसके कई कारण है — (1.) गद्य का विकास, (2.) राष्ट्रीय भावों की प्रधानता आज की राष्ट्रीयता में आर्थिक, सामाजिक धार्मिक आदि - सभी समस्याओं का समावेश है (3.) शुद्ध शृंगारिक - भक्ति की मर्यादा एवं रीति की अति से दूर मध्यम मार्ग - शुद्ध वातावरण (4.) आज का साहित्य जीवन के अधिक समीप है - अब उसमें कल्पना की अपेक्षा वास्तविकता (सत्य) का प्राधान्य है। इस युग में आंशिक रूप से छायावाद और प्रयोगवाद को छोड़कर सर्वत्र मानव जीवन की प्रधानता दी गई है।

(5.) वादों की प्रधानता - अन्य युग में वादों की प्रधानता नहीं थी, परन्तु इस युग में वादों की बाढ़ आ गई जिससे साहित्य के क्षेत्रों को अधिक विस्तृत बनाया गया। यही इस काल की विशेषताएँ हैं।